हिंदी साहित्य चैनल

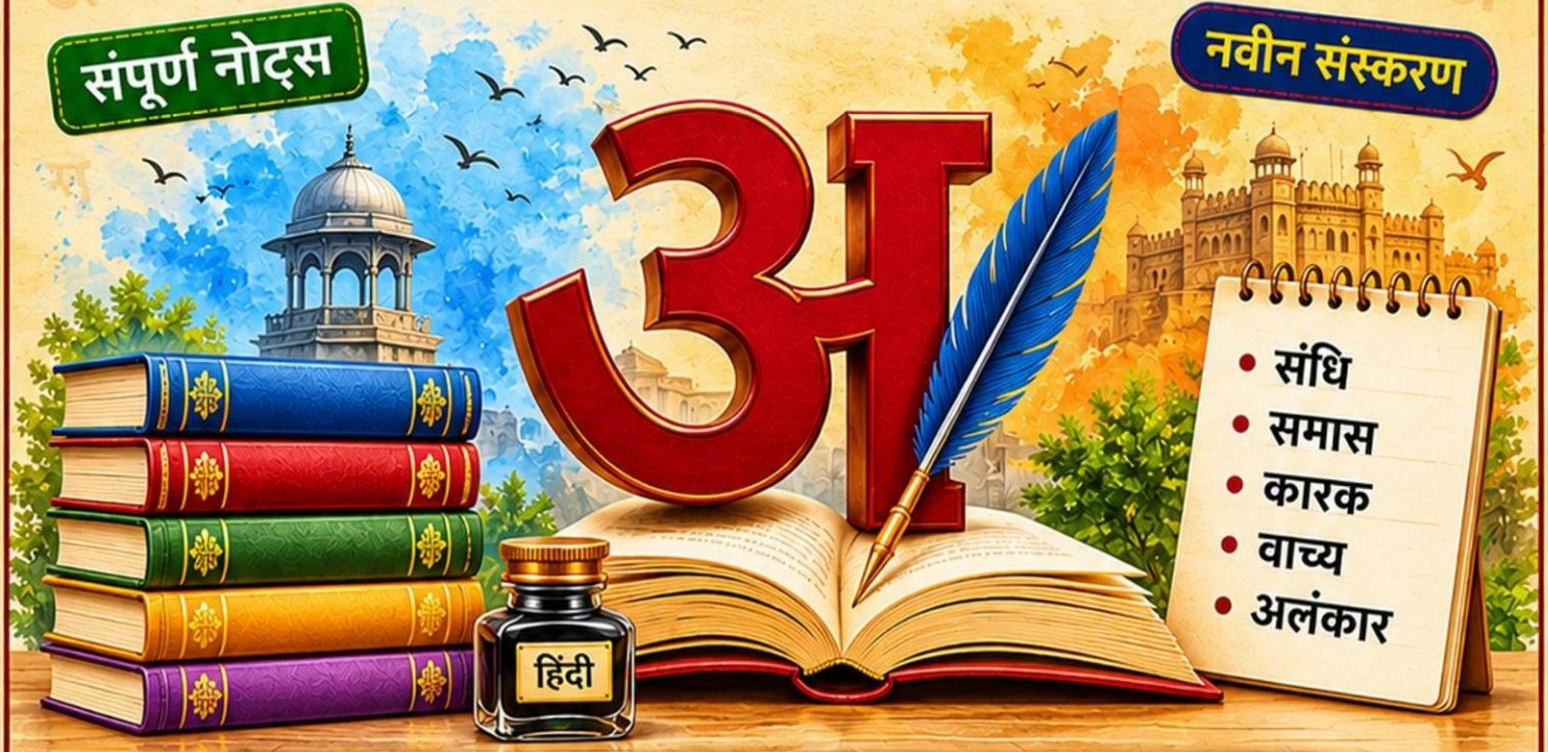
ई-बुक

हिंदी व्याकरण

प्रामाणिक ग्रंथों का सार • सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

संपूर्ण नोट्स

नवीन संस्करण



- ✓ सरल भाषा, अधिक से अधिक उदाहरण
- ✓ विद्वानों के मत एवं मतभेद
- ✓ याद-ट्रिक, फ़्लोचार्ट, भ्रम-निवारण
- ✓ अध्यायवार अभ्यास प्रश्न (उत्तर सहित)
- ✓ शब्द-शक्ति, रस, छंद, अलंकार सहित

RPSC • व्याख्याता • TGT/PGT • REET • RAS • पटवारी • CET • SSC



केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड., नेट (हिंदी) • कॉलेज व्याख्याता

store.hindisahity.com



लेखक परिचय
केवल कृष्ण घोड़ेला
एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी) · कॉलेज व्याख्याता · श्रीगंगानगर (राजस्थान)
हिंदी साहित्य चैनल के संचालक। UGC NET/JRF, SET, TGT, PGT, RPSC आदि परीक्षाओं के लिए वर्षों से हिंदी पढ़ा रहे हैं।
hindisahity.com store.hindisahity.com
YouTube : Hindi Sahitya Channel Telegram

© सर्वाधिकार सुरक्षित (All Rights Reserved)
लेखक एवं संकलनकर्ता : केवल कृष्ण घोड़ेला प्रस्तुति एवं प्रकाशन : हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर संस्करण : 2026-27
यह ई-बुक केवल कृष्ण घोड़ेला द्वारा तैयार की गई है और हिंदी साहित्य चैनल (store.hindisahity.com) द्वारा प्रकाशित है। इसकी विषय-वस्तु, प्रस्तुति, तालिकाएँ, बॉक्स और प्रश्न लेखक की बौद्धिक संपदा हैं, जो प्रतिलिप्यधिकार अधिनियम, 1957 के अंतर्गत सुरक्षित हैं।
यह PDF केवल ख़रीदार के व्यक्तिगत अध्ययन के लिए है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसे या इसके किसी अंश को कॉपी, प्रिंट या फ़ोटोकॉपी करके बेचना या बाँटना; WhatsApp, Telegram, Facebook आदि किसी ग्रुप या चैनल में साझा करना; किसी वेबसाइट, ऐप, YouTube वीडियो या कोचिंग सामग्री में उपयोग करना **पूर्णतः वर्जित है**। ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।
अस्वीकरण : पुस्तक तैयार करने में पूरी सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए लेखक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। परीक्षा से जुड़ी आधिकारिक जानकारी के लिए संबंधित आयोग की अधिसूचना देखें। कोई त्रुटि मिले तो WhatsApp 9680260474 पर बताएँ, अगले संस्करण में सुधार किया जाएगा।

इस ई-बुक का उपयोग कैसे करें
- खंड 1 से क्रम से पढ़ें; हर अध्याय के आरंभ में "एक नज़र में" बॉक्स से पूरे अध्याय का सार मिल जाता है।
- "याद-ट्रिक", "भ्रम-निवारण" और "सामान्य गलतियाँ" वाले बॉक्स परीक्षा से पहले बार-बार दोहराइए।
- हर अध्याय के अंत में अभ्यास प्रश्न और उनकी उत्तरमाला (व्याख्या सहित) दी गई है — पढ़ने के तुरंत बाद हल कीजिए।
- सूचकांक में किसी भी अध्याय या विषय पर क्लिक करके सीधे उस पृष्ठ पर पहुँचिए।

इस पुस्तक में क्या-क्या है
- खंड 1 : भाषा और लिपि — भाषा, बोली, हिंदी का विकास, देवनागरी
- खंड 2 : ध्वनि और वर्ण — वर्ण-विचार, वर्तनी, संधि
- खंड 3 : शब्द-विचार — शब्द-भेद, उपसर्ग, प्रत्यय, समास
- खंड 4 : पद-विचार — संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण
- खंड 5 : पद-विचार — क्रिया, काल, वाच्य-प्रयोग, अव्यय
- खंड 6 : वाक्य-विचार — वाक्य, उपवाक्य, पदबंध, विराम-चिह्न, वाक्य-शुद्धि, शब्द-शुद्धि
- खंड 7 : शब्द-भंडार — पर्याय, विलोम, अनेकार्थी, श्रुतिसम, एक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ
- खंड 8 : काव्य-तत्त्व — शब्द-शक्ति, रस, छंद, अलंकार, काव्य-सिद्धांत
- खंड 9 : पारिभाषिक शब्दावली (हिंदी–अंग्रेज़ी)

आपकी परीक्षा के अनुसार कस्टम नोट्स — ऑर्डर पर तैयार
हमारी टीम RPSC, TGT, PGT, UPSC, NET/JRF सहित किसी भी परीक्षा के लिए आपके पाठ्यक्रम के अनुसार विशेष नोट्स ऑर्डर पर तैयार करती है (सशुल्क सेवा)।
WhatsApp : 9680260474

📖 सूचकांक (विषय-सूची)

खंड 1 : भाषा और लिपि 10

अध्याय 1 : भाषा, बोली और व्याकरण 10

1.1 भाषा : अर्थ और व्युत्पत्ति 10
1.2 भाषा की परिभाषाएँ 10
1.3 भाषा की प्रकृति (विशेषताएँ) 11
1.4 भाषा के विविध रूप 12
1.5 बोली और भाषा में अंतर 13
1.6 व्याकरण : अर्थ, परिभाषा और अंग 14
1.7 हिंदी व्याकरण का इतिहास 15

अध्याय 2 : हिंदी भाषा : उद्भव, विकास और रूप 18

2.1 'हिंदी' शब्द : व्युत्पत्ति और अर्थ 18
2.2 भाषा-परिवार में हिंदी का स्थान 19
2.3 भारतीय आर्यभाषा का विकास 20
2.4 हिंदी का क्षेत्र, उपभाषाएँ और बोलियाँ 22
2.5 हिंदी के विविध रूप 23
2.6 हिंदी की प्रकृति और विशेषताएँ 25

अध्याय 3 : देवनागरी लिपि 28

3.1 लिपि : अर्थ और विकास 28
3.2 भारतीय लिपि की प्राचीनता 28
3.3 भारत की प्राचीन लिपियाँ 28
3.4 ब्राह्मी से देवनागरी तक 29
3.5 'देवनागरी' नामकरण 30
3.6 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ (गुण) 30
3.7 देवनागरी लिपि की कमियाँ (दोष) 31
3.8 देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास 31
3.9 मानक देवनागरी वर्णमाला (हिंदी) 32

खंड 2 : ध्वनि और वर्ण 35

अध्याय 4 : वर्ण-विचार 35

4.1 ध्वनि, वर्ण और अक्षर 35
4.2 हिंदी वर्णमाला 35
4.3 स्वर 36
4.4 अयोगवाह : अनुस्वार और विसर्ग 38
4.5 व्यंजन 38
4.6 विशिष्ट वर्णों का उच्चारण 40
4.7 बलाघात, संगम और अनुतान (खंडेतर ध्वनि-गुण) 41
4.8 उच्चारण की प्रमुख अशुद्धियाँ 41

अध्याय 5 : वर्तनी 43

5.1 वर्तनी का अर्थ और महत्त्व 43
5.2 मानक वर्तनी के प्रमुख नियम 44
5.3 वर्ण-विशेष संबंधी नियम 45
5.4 वर्तनी की प्रमुख अशुद्धियाँ 46

अध्याय 6 : संधि 49

6.1 संधि : अर्थ, परिभाषा और संधि-समास में अंतर 49
6.2 स्वर संधि 50
6.3 व्यंजन संधि 51
6.4 विसर्ग संधि 52
6.5 हिंदी की अपनी संधियाँ 53

खंड 1 : भाषा और लिपि

अध्याय 1 : भाषा, बोली और व्याकरण

🧠 एक नज़र में

- **भाषा** — मनुष्य के मुख से उच्चरित, यादृच्छिक और रूढ़ ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था, जिससे समाज के लोग विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- 'भाषा' शब्द संस्कृत की **'भाष्' धातु** से बना है — अर्थ है 'बोलना', 'कहना', 'वाणी को व्यक्त करना'।
- भाषा के रूप : व्यक्ति-बोली → उपबोली → बोली → उपभाषा/विभाषा → भाषा → परिनिष्ठित (मानक) भाषा → राजभाषा/राष्ट्रभाषा।
- **व्याकरण** — वह शास्त्र जो भाषा के शुद्ध रूप (बोलने, लिखने और समझने) के नियम बताता है। इसके तीन मुख्य अंग हैं : वर्ण-विचार, शब्द-विचार, वाक्य-विचार।
- हिंदी व्याकरण का इतिहास लगभग **1676 ई.** से आरंभ होता है; पहले व्याकरण विदेशियों ने लिखे, भारतीयों में प्रथम वैयाकरण **पं. श्रीलाल** ('भाषा चंद्रोदय', 1855) माने जाते हैं।

1.1 भाषा : अर्थ और व्युत्पत्ति

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण उसे सदा दूसरों से विचार-विनिमय करना पड़ता है। विचार-विनिमय के अनेक साधन हैं — कभी हम सिर हिलाकर 'हाँ' या 'ना' कह देते हैं, गार्ड हरी झंडी दिखाकर गाड़ी चलने का संकेत देता है, चोर अँधेरे में हाथ दबाकर बात कर लेते हैं, कवि बिहारी के नायक-नायिका तो 'भरे भौन में करत हैं नैननु ही सों बात'। इन साधनों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है :

- **स्पर्शग्राह्य साधन** — जिनका ग्रहण छूकर होता है; जैसे हाथ दबाना।
- **नेत्रग्राह्य साधन** — जिनके लिए आँख चाहिए; जैसे झंडी दिखाना, हाथ से संकेत करना।
- **श्रोत्रग्राह्य साधन** — जिनका ग्रहण कान से होता है; जैसे ताली, चुटकी, सीटी और **बोलना**।

व्यापक अर्थ में ये सभी 'भाषा' कहे जा सकते हैं, पर व्याकरण और भाषाविज्ञान में भाषा का अर्थ सीमित है — केवल **मनुष्य के उच्चारण-अवयवों से निकली सार्थक ध्वनियाँ**, जिनसे बातचीत की जा सके। पशु-पक्षियों की बोली, ताली या चुटकी इस अर्थ में भाषा नहीं हैं।

'भाषा' शब्द संस्कृत की **भाष् (व्यक्तायां वाचि)** धातु से बना है, जिसका अर्थ है — वाणी को व्यक्त करना। अतः सामान्य अर्थ में **"मनुष्य की सार्थक व्यक्त वाणी ही भाषा है।"**

1.2 भाषा की परिभाषाएँ

भाषा की पूर्ण परिभाषा देना कठिन है, क्योंकि परिभाषा में प्रायः **अतिव्याप्ति** (जितने पर लागू होनी चाहिए, उससे अधिक पर लागू होना) या **अव्याप्ति** (उससे कम पर लागू होना) का दोष आ जाता है। उदाहरण — "पुस्तक वह है जिसे पढ़ा जाए" में अतिव्याप्ति है (चिट्ठी, अख़बार भी पढ़े जाते हैं); "पुस्तक वह है जिस पर जिल्द हो" में अव्याप्ति है (बिना जिल्द की पुस्तकें भी होती हैं)। फिर भी विद्वानों ने भाषा की अनेक परिभाषाएँ दी हैं —

🎓 हिंदी वर्णों की संख्या : किसका क्या मत

- **44 वर्ण** — 11 स्वर + 33 मूल व्यंजन (केवल मूल वर्ण)।
- **46 वर्ण** — 11 स्वर + 33 व्यंजन + अं, अः (अनेक पारंपरिक व्याकरणों में)।
- **52 वर्ण** — 11 स्वर + 41 व्यंजन (33 मूल + अं, अः + ड़, ढ़ + क्ष, त्र, ज्ञ, श्र); मानक वर्णमाला को पूरा गिनने पर।
- **आधुनिक भाषावैज्ञानिक मत** — हिंदी के उच्चारण की दृष्टि से **ऋ** अब स्वर नहीं रहा (हिंदी में इसका उच्चारण 'रि' — र् + इ होता है), जबकि अंग्रेज़ी शब्दों के लिए **ऑ** नया स्वर बन गया है। इस दृष्टि से हिंदी के 11 स्वर हैं — अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। कुछ विद्वान आगत ध्वनियों (क़, ख़, ग़, ज़, फ़) को जोड़कर व्यंजनों की संख्या और अधिक मानते हैं।
- **परीक्षा-सूत्र** : प्रश्न में 'मूल वर्ण' हो तो 44, 'अयोगवाह सहित' हो तो 46, 'मानक वर्णमाला / कुल वर्ण' हो तो 52 चुनें।

4.3 स्वर

स्वर वे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण **स्वतंत्र रूप से**, बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के होता है और जिनके उच्चारण में भीतर से आने वाली वायु **मुख से बिना रुकावट** (निर्बाध) निकलती है। स्वर व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं।

स्वरों का वर्गीकरण

(क) मात्रा या उच्चारण-काल के आधार पर

भेद	परिभाषा	स्वर
ह्रस्व स्वर (मूल स्वर, एकमात्रिक)	जिनके उच्चारण में सबसे कम (एक मात्रा का) समय लगे; इनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों से नहीं होती	अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर (द्विमात्रिक)	जिनके उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
प्लुत स्वर (त्रिमात्रिक)	जिनके उच्चारण में तिगुना समय लगे; पुकारने या वेद-पाठ में; चिह्न '३'	ओ३म्, हे राम३

- दीर्घ स्वरों के दो प्रकार माने जाते हैं — **सजातीय/सवर्ण दीर्घ** (आ = अ + अ, ई = इ + इ, ऊ = उ + उ) और **संधि/संयुक्त स्वर** (ए = अ + इ, ऐ = अ + ए, ओ = अ + उ, औ = अ + ओ)।
- प्लुत का प्रयोग संस्कृत (विशेषतः वैदिक) में होता था; हिंदी में साधारणतः नहीं।

(ख) जीभ के प्रयुक्त भाग के आधार पर

- **अग्र स्वर** — जीभ का अगला भाग ऊपर उठे : **इ, ई, ए, ऐ**
- **मध्य स्वर** — जीभ का मध्य भाग : **अ**
- **पश्च स्वर** — जीभ का पिछला भाग : **आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ**

(ग) मुख-विवर (मुख के खुलने) के आधार पर

- **संवृत** (मुख सबसे कम खुला, जीभ सबसे ऊँची) : **इ, ई, उ, ऊ**
- **अर्धसंवृत** : **ए, ओ**
- **अर्धविवृत** : **ऐ, औ, अ, ऑ**
- **विवृत** (मुख सबसे अधिक खुला) : **आ**

(घ) ओठों की आकृति के आधार पर

- **वृत्तमुखी / वृत्ताकार** (ओठ गोल) : **उ, ऊ, ओ, औ, ऑ**
- **अवृत्तमुखी / अवृत्ताकार** (ओठ गोल नहीं) : **अ, आ, इ, ई, ए, ऐ**

(ङ) नासिका के आधार पर

- **निरनुनासिक** — केवल मुख से बोले जाने वाले : अ, आ, इ (आप, अपना, इधर)
- **अनुनासिक** — मुख और नासिका दोनों से : अँ, आँ, इँ (आँख, गाँव, दाँत, सँवारना)

(च) जाति के आधार पर

- **सवर्ण (सजातीय) स्वर** — एक ही स्थान से उच्चरित ह्रस्व-दीर्घ जोड़े : अ-आ, इ-ई, उ-ऊ।
- **असवर्ण (विजातीय) स्वर** — भिन्न स्थानों के : अ-इ, अ-उ, इ-उ।

⚠ संधि और समास में अंतर

आधार	संधि	समास
मेल	**वर्णों** का मेल	**पदों (शब्दों)** का मेल
विभक्ति	विभक्ति का लोप नहीं होता	बीच की विभक्ति / योजक शब्द लुप्त होते हैं
विग्रह	संधि-विच्छेद : विद्या + आलय	समास-विग्रह : विद्या का आलय
विकार	वर्णों में परिवर्तन अनिवार्य	वर्ण-परिवर्तन आवश्यक नहीं (राजपुत्र)
भाषा	मुख्यतः तत्सम (संस्कृत) शब्दों में	तत्सम, तद्भव, देशज सभी में

याद रखें — **हर समास में संधि हो, यह आवश्यक नहीं**; और कई शब्दों में दोनों साथ होते हैं (विद्यालय = विद्या + आलय संधि; विद्या का आलय समास)।

6.2 स्वर संधि

दो **स्वरों** के मेल से होने वाले विकार को **स्वर संधि** कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं।

(1) दीर्घ संधि

सूत्र — अकः सवर्णे दीर्घः। यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ के बाद **वही (सवर्ण)** ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए, तो दोनों मिलकर **दीर्घ** हो जाते हैं।

मेल	परिणाम	उदाहरण
अ + अ / अ + आ / आ + अ / आ + आ	आ	अन्न + अभाव = अन्नाभाव; शिव + आलय = शिवालय; विद्या + अर्थी = विद्यार्थी; विद्या + आलय = विद्यालय; महा + आशय = महाशय; हिम + आलय = हिमालय; परम + अर्थ = परमार्थ; रत्न + आकर = रत्नाकर
इ + इ / इ + ई / ई + इ / ई + ई	ई	गिरि + इंद्र = गिरींद्र; गिरि + ईश = गिरीश; मही + इंद्र = महींद्र; पृथ्वी + ईश = पृथ्वीश; मुनि + इंद्र = मुनींद्र; परि + ईक्षा = परीक्षा; अभि + इष्ट = अभीष्ट
उ + उ / उ + ऊ / ऊ + उ / ऊ + ऊ	ऊ	भानु + उदय = भानूदय; लघु + ऊर्मि = लघूर्मि; वधू + उत्सव = वधूत्सव; भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व; अंबु + ऊर्मि = अंबूर्मि
ऋ + ऋ	ॠ	पितृ + ऋण = पितॄण (हिंदी में प्रयोग दुर्लभ)

(2) गुण संधि

सूत्र — आद्गुणः। यदि अ या आ के बाद इ/ई, उ/ऊ या ऋ आए, तो क्रमशः **ए, ओ, अर्** हो जाते हैं।

मेल	परिणाम	उदाहरण
अ/आ + इ/ई	ए	देव + इंद्र = देवेंद्र; देव + ईश = देवेश; महा + इंद्र = महेंद्र; रमा + ईश = रमेश; गण + ईश = गणेश; नर + इंद्र = नरेंद्र; सुर + इंद्र = सुरेंद्र; परम + ईश्वर = परमेश्वर
अ/आ + उ/ऊ	ओ	चंद्र + उदय = चंद्रोदय; सूर्य + उदय = सूर्योदय; महा + उत्सव = महोत्सव; समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि; गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि; पर + उपकार = परोपकार; हित + उपदेश = हितोपदेश; जल + ऊर्मि = जलोर्मि
अ/आ + ऋ	अर्	देव + ऋषि = देवर्षि; महा + ऋषि = महर्षि; सप्त + ऋषि = सप्तर्षि; राज + ऋषि = राजर्षि; ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

(3) वृद्धि संधि

सूत्र — वृद्धिरेचि। यदि अ या आ के बाद ए/ऐ आए तो **ऐ**, तथा ओ/औ आए तो **औ** हो जाता है।

मेल	परिणाम	उदाहरण
अ/आ + ए/ऐ	ऐ	एक + एक = एकैक; सदा + एव = सदैव; तथा + एव = तथैव; मत + ऐक्य = मतैक्य; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य; धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य; वसुधा + एव = वसुधैव
अ/आ + ओ/औ	औ	परम + ओजस्वी = परमौजस्वी; वन + ओषधि = वनौषधि; परम + औषध = परमौषध; महा + ओज = महौज; महा + औषध = महौषध; जल + ओघ = जलौघ

(4) यण संधि

सूत्र — इको यणचि। यदि इ/ई, उ/ऊ, ऋ के बाद कोई **भिन्न (असवर्ण)** स्वर आए, तो इ/ई का **य्**, उ/ऊ का **व्** और ऋ का **र्** हो जाता है।

मेल	परिणाम	उदाहरण
इ/ई + भिन्न स्वर	य्	यदि + अपि = यद्यपि; अति + आवश्यक = अत्यावश्यक; इति + आदि = इत्यादि; अति + उत्तम = अत्युत्तम; प्रति + एक = प्रत्येक; उपरि + उक्त = उपर्युक्त; देवी + आगम = देव्यागम; नदी + अंबु = नद्यंबु; अभि + आगत = अभ्यागत; वि + आकुल = व्याकुल
उ/ऊ + भिन्न स्वर	व्	अनु + अय = अन्वय; सु + आगत = स्वागत; मधु + आलय = मध्वालय; गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य; अनु + एषण = अन्वेषण; वधू + आगमन = वध्वागमन; मनु + अंतर = मन्वंतर
ऋ + भिन्न स्वर	र्	पितृ + आदेश = पित्रादेश; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा; मातृ + आनंद = मात्रानंद; पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

(5) अयादि संधि

सूत्र — एचोऽयवायावः। यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई **भिन्न स्वर** आए, तो ए का **अय्**, ऐ का **आय्**, ओ का **अव्** और औ का **आव्** हो जाता है।

मेल	परिणाम	उदाहरण
ए + स्वर	अय्	ने + अन = नयन; चे + अन = चयन; शे + अन = शयन
ऐ + स्वर	आय्	नै + अक = नायक; गै + अक = गायक; गै + इका = गायिका
ओ + स्वर	अव्	पो + अन = पवन; भो + अन = भवन; श्रो + अन = श्रवण; पो + इत्र = पवित्र
औ + स्वर	आव्	पौ + अक = पावक; पौ + अन = पावन; नौ + इक = नाविक; भौ + उक = भावुक

💡 स्वर संधि पहचानने का फ़्लोचार्ट

- संधि-युक्त शब्द में **आ, ई, ऊ** (दीर्घ) दिखे और विच्छेद में **दोनों ओर एक ही जाति** का स्वर हो → **दीर्घ** (विद्यालय)।
- **ए, ओ, अर्** दिखे और पहले पद के अंत में **अ/आ** हो → **गुण** (महेंद्र, महोत्सव, महर्षि)।
- **ऐ, औ** दिखे → **वृद्धि** (सदैव, वनौषधि)।
- **य, व, र** से पहले आधा व्यंजन दिखे (द्य, त्य, न्व, त्र) और पहले पद के अंत में **इ, उ, ऋ** हो → **यण** (इत्यादि, स्वागत, पित्रादेश)।
- **अय, आय, अव, आव** दिखे → **अयादि** (नयन, नायक, पवन, पावक)।

याद-सूत्र : "दी-गु-वृ-य-अ" — दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण, अयादि।

⚠️ गुण और वृद्धि में भ्रम

- **अ/आ + इ, उ, ऋ** → गुण (**ए, ओ, अर्**) — महेंद्र, महोत्सव, महर्षि।
- **अ/आ + ए, ऐ, ओ, औ** → वृद्धि (**ऐ, औ**) — सदैव, महौषध।
- पहचान : दूसरे पद का पहला स्वर **मूल (इ, उ, ऋ)** है तो गुण, **संयुक्त (ए, ऐ, ओ, औ)** है तो वृद्धि।
- **ध्यान** : 'सदैव' (सदा + एव) में वृद्धि है, गुण नहीं; 'महेश' (महा + ईश) में गुण है।

6.3 व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से या व्यंजन का स्वर से मेल होने पर जो विकार होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

नियम	स्पष्टीकरण	उदाहरण
1	वर्ग के **पहले वर्ण** (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद कोई **स्वर**, वर्ग का **तीसरा-चौथा** वर्ण या **य, र, ल, व** आए, तो पहला वर्ण अपने वर्ग का **तीसरा** वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) बन जाता है	दिक् + गज = दिग्गज; वाक् + ईश = वागीश; अच् + अंत = अजंत; षट् + आनन = षडानन; सत् + आचार = सदाचार; जगत् + ईश = जगदीश; उत् + योग = उद्योग; सत् + भावना = सद्भावना; अप् + ज = अब्ज

7.2 शब्द-भेद के चार आधार

आधार	भेद	मुख्य उदाहरण
स्रोत / उत्पत्ति (व्युत्पत्ति)	तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी (और संकर)	कर्म–काम, लोटा, किताब
रचना / बनावट	रूढ़, यौगिक, योगरूढ़	घर; विद्यालय; पंकज
प्रयोग / रूपांतर	विकारी (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया); अविकारी (क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक)	लड़का, मैं, अच्छा, जाना; यहाँ, के बिना, और, अरे
अर्थ	सार्थक–निरर्थक; एकार्थी–अनेकार्थी; पर्यायवाची–विलोम आदि	कनक (सोना/धतूरा)

7.3 स्रोत (उत्पत्ति) के आधार पर शब्द-भेद

(1) तत्सम शब्द

तत्सम = तत् + सम — 'उसके समान'; वे शब्द जो **संस्कृत से हिंदी में ज्यों-के-त्यों** (बिना किसी परिवर्तन के) आए हैं।
उदाहरण — अग्नि, सूर्य, चंद्र, पुष्प, पत्र, वायु, कर्म, कृषक, ग्राम, गृह, क्षेत्र, ज्ञान, विद्या, पृथ्वी, रात्रि, मयूर, दुग्ध, नेत्र, अश्रु।

(2) तद्भव शब्द

तद्भव = तत् + भव — 'उससे उत्पन्न'; वे शब्द जो **संस्कृत से पालि–प्राकृत–अपभ्रंश की लंबी यात्रा** तय करके, परिवर्तित रूप में हिंदी में आए। हिंदी के अधिकांश दैनिक शब्द तद्भव हैं।
दो प्रकार — (क) **संस्कृत से सीधे विकृत** होकर आए (कर्म → काम), (ख) **प्राकृत के रास्ते** आए (पुष्प → पुप्फ → फूल)।
संस्कृत → प्राकृत → हिंदी की यात्रा

संस्कृत	प्राकृत	हिंदी (तद्भव)
अग्नि	अग्गि	आग
पुष्प	पुप्फ	फूल
चतुर्दश	चोद्दस	चौदह
मयूर	मऊर	मोर
वचन	वअण	बैन
नव	णअ	नौ
चत्वारि	चत्तारि	चार
अर्धतृतीय	अड्ढतइअ	ढाई
मध्य	मज्झ	में
वत्स	वच्छ	बच्चा / बाछा
प्रिय	पिय	पिया

प्रमुख तत्सम–तद्भव युग्म (परीक्षा-उपयोगी)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग	अंधकार	अँधेरा
अक्षि	आँख	अश्रु	आँसू
आश्चर्य	अचरज	आम्र	आम
उज्ज्वल	उजला	उपाध्याय	ओझा
अर्ध	आधा	उष्ट्र	ऊँट
कर्ण	कान	कर्म	काम
कार्य	काज	कुंभकार	कुम्हार
कंटक	काँटा	क्षेत्र	खेत

💡 तत्पुरुष : कारक-चिह्न याद रखने की तालिका

विभक्ति	कारक	चिह्न	समास-भेद
2	कर्म	को	कर्म तत्पुरुष
3	करण	से, द्वारा	करण तत्पुरुष
4	संप्रदान	को, के लिए	संप्रदान तत्पुरुष
5	अपादान	से (अलग)	अपादान तत्पुरुष
6	संबंध	का, के, की	संबंध तत्पुरुष
7	अधिकरण	में, पर	अधिकरण तत्पुरुष

संख्या 2 से 7 तक — कर्ता कारक (प्रथमा, ने) और संबोधन में तत्पुरुष नहीं होता।

तत्पुरुष के अन्य भेद

भेद	लक्षण	उदाहरण
नञ् तत्पुरुष	पूर्वपद निषेध बताता है (अ, अन्, न, ना, गैर...)	अधर्म (न धर्म), अनंत, असंभव, अनादि, अनुचित, अनर्थ, अहिंसा
उपपद (कृदंत) तत्पुरुष	उत्तरपद कृदंत होता है, जिसका स्वतंत्र प्रयोग नहीं	कुंभकार (कुंभ बनानेवाला), जलज (जल में जन्मा), पंकज, ग्रंथकार, तटस्थ (तट पर स्थित)
लुप्तपद (मध्यमपदलोपी)	बीच का पद लुप्त हो जाता है	दहीबड़ा (दही में डूबा हुआ बड़ा), पर्णशाला (पर्ण से बनी शाला), बैलगाड़ी (बैलों से खींची जानेवाली गाड़ी), पनचक्की (पानी से चलनेवाली चक्की)
प्रादि तत्पुरुष	पूर्वपद 'प्र', 'अति' आदि	प्राचार्य (प्रगत आचार्य), अतिवृष्टि
अलुक् तत्पुरुष	विभक्ति का लोप **नहीं** होता	सरसिज (सरसि + ज), मनसिज, खेचर (खे + चर), वाचस्पति, युधिष्ठिर, धनंजय

⚠️ नञ् तत्पुरुष और बहुव्रीहि में भ्रम

शब्द	नञ् तत्पुरुष में	बहुव्रीहि में
अनंत	न अंत	जिसका अंत न हो (ईश्वर / शेषनाग)
अजन्मा	न जन्मा	जो जन्म न ले (ईश्वर)
अपुत्र	न पुत्र	जिसके पुत्र नहीं है (पुरुष)

नियम — यदि **विशेषण** रूप में 'जिसका/जिसके' जोड़कर किसी **तीसरे** व्यक्ति/वस्तु का बोध हो, तो प्रायः बहुव्रीहि; केवल निषेध का बोध हो तो नञ् तत्पुरुष।

10.4 कर्मधारय समास

जिस समास में **उत्तरपद प्रधान** हो और **पूर्वपद-उत्तरपद** में **विशेषण-विशेष्य** या **उपमान-उपमेय** का संबंध हो, वह **कर्मधारय** है। इसे **समानाधिकरण तत्पुरुष** भी कहते हैं, क्योंकि दोनों पदों में एक ही कारक (प्रथमा) रहता है।

भेद	लक्षण	उदाहरण (विग्रह)
विशेषण-पूर्वपद	पहला पद विशेषण	नीलकमल (नीला कमल), महापुरुष (महान पुरुष), परमानंद (परम आनंद), पीतांबर (पीला अंबर), कृष्णसर्प, नवयुवक, महाराज
विशेष्य-पूर्वपद	पहला पद विशेष्य	पुरुषोत्तम (पुरुष जो उत्तम है), मुनिवर (मुनि जो श्रेष्ठ है), कविराज

कारक	विभक्ति	चिह्न (परसर्ग)	प्रश्नवाचक संकेत	उदाहरण
संबोधन	(अष्टमी)	हे, अरे, ओ, अजी	पुकार	**हे** राम!

💡 कारक याद रखने का सूत्र

"कर्ता ने, कर्म को, करण से; संप्रदान को/के लिए; अपादान से; संबंध का, के, की; अधिकरण में, पर; संबोधन हे, अरे।"

- **विभक्ति-क्रम** (संस्कृत) : प्रथमा (कर्ता), द्वितीया (कर्म), तृतीया (करण), चतुर्थी (संप्रदान), पंचमी (अपादान), षष्ठी (संबंध), सप्तमी (अधिकरण)।
- **'को' के दो कारक** : कर्म और संप्रदान; **'से' के दो कारक** : करण और अपादान।

🎓 कारकों की संख्या और स्वरूप : विद्वानों के मत

- **पाणिनि** — कारक **छह** : कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण (क्रिया से संबंध बताने के कारण)।
- **संबंध** को पाणिनि ने कारक नहीं माना (उसे केवल षष्ठी विभक्ति में रखा); संबोधन को भी कारक में नहीं गिना, क्योंकि वह वाक्य के क्रिया-संबंध से बाहर है।
- **हिंदी वैयाकरण** (कामताप्रसाद गुरु आदि) — कारक **आठ** : कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन।
- **'कारक' और 'विभक्ति' का भेद** — कारक अर्थ-संबंध है; विभक्ति उसका रूप-चिह्न। संस्कृत में **सात विभक्तियाँ**; हिंदी में आठ कारकों के लिए आठ चिह्न-समूह।
- **परसर्ग** — आधुनिक हिंदी-शास्त्र में 'ने, को, से...' को **परसर्ग (postposition)** भी कहा जाता है, क्योंकि ये शब्द के बाद आते हैं।
- **परीक्षा-नीति** : "हिंदी में कारक कितने?" — **8**; "संस्कृत में" — **6**; "विभक्तियाँ" — **7** (संबोधन सहित 8)।

14.2 विभक्तियों (परसर्गों) की वर्तनी

स्थिति	नियम	उदाहरण
संज्ञा के साथ	विभक्ति-चिह्न **अलग** लिखे जाते हैं	राम ने, लड़के को, सीता का, घर में
सर्वनाम के साथ	विभक्ति-चिह्न **जुड़ा** लिखा जाता है	उसने, मुझको, तुमसे, हमारा, किसमें
सर्वनाम + दो चिह्न	एक जुड़ा, दूसरा अलग	उसके लिए, तुमसे ही, आपके द्वारा
'ही', 'तक', 'भर' जैसे निपात	अलग	राम को ही, घर तक, दिन भर

14.3 (1) कर्ता कारक

वाक्य में **क्रिया करने वाला** कर्ता है। कर्ता कारक में **ने** चिह्न कभी आता है, कभी नहीं।

वाक्य	कारक-चिह्न	विशेष
राम ने खाना खाया	ने	भूतकाल की सकर्मक क्रिया
राम पढ़ता है	शून्य	वर्तमान काल
वह जाएगा	शून्य	भविष्यत् काल
मुझको जाना है	को	विवशता/आवश्यकता
उससे चला नहीं जाता	से	असमर्थता

'ने' के प्रयोग के नियम

'ने' कहाँ लगता है?

1. केवल **भूतकाल** में — सामान्य, आसन्न, पूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद् भूत। (अपूर्ण भूत में **नहीं** लगता।)
2. **सकर्मक क्रिया** के कर्ता के साथ : राम **ने** रोटी खाई; मैंने पुस्तक पढ़ी।
3. **कर्मवाच्य / कर्मणि प्रयोग** में क्रिया **कर्म** के लिंग-वचन के अनुसार चलती है : राम ने **पुस्तक** पढ़ी (स्त्रीलिंग)।

'ने' कहाँ नहीं लगता?

1. **वर्तमान और भविष्यत् काल** में : वह खाता है; वह खाएगा।

🎯 परीक्षा में कैसे पूछा जाता है?

- "'चार पुस्तकें' में 'चार' —" संख्यावाचक (निश्चित गणनावाचक)।
- "'थोड़ा पानी' में 'थोड़ा' —" परिमाणवाचक।
- "'वह लड़का' में 'वह' —" सार्वनामिक विशेषण।
- "'बहुत सुंदर' में 'बहुत' —" प्रविशेषण।
- "'पहला' —" क्रमवाचक संख्यावाचक।
- "'तर' और 'तम' प्रत्यय किस अवस्था के?" — उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।

📝 एक पेज में दोहराइए

- विशेषण = संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता; विशेष्य = जिसकी विशेषता; प्रविशेषण = विशेषण की विशेषता।
- भेद : गुणवाचक, संख्यावाचक (निश्चित/अनिश्चित; क्रमवाचक, आवृत्तिवाचक, समुदायवाचक, प्रत्येकबोधक), परिमाणवाचक, सार्वनामिक।
- सार्वनामिक विशेषण : यह, वह, कोई, कौन, कुछ, जो, ऐसा, कैसा, जितना।
- तुलना : मूल, उत्तर (तर), उत्तम (तम / सबसे)।
- आकारांत विशेषण बदलते हैं; अन्य अविकारी।
- 'सर्वश्रेष्ठतम' ❌ → 'सर्वश्रेष्ठ'।

🎯 अभ्यास प्रश्न

1. विशेषण के कितने भेद माने जाते हैं?

(अ) 2 (ब) 3
(स) 4 (द) 5

2. 'चार पुस्तकें' में 'चार' किस प्रकार का विशेषण है?

(अ) गुणवाचक (ब) संख्यावाचक
(स) परिमाणवाचक (द) सार्वनामिक

3. 'थोड़ा पानी' में 'थोड़ा' किस प्रकार का विशेषण है?

(अ) संख्यावाचक (ब) गुणवाचक
(स) परिमाणवाचक (द) सार्वनामिक

4. 'वह लड़का' में 'वह' क्या है?

(अ) सर्वनाम (ब) क्रियाविशेषण
(स) सार्वनामिक विशेषण (द) संज्ञा

5. 'बहुत सुंदर' में 'बहुत' क्या है?

(अ) विशेषण (ब) प्रविशेषण
(स) क्रियाविशेषण (द) संज्ञा

6. 'पहला' शब्द किस प्रकार का विशेषण है?

(अ) आवृत्तिवाचक (ब) समुदायवाचक
(स) क्रमवाचक (द) प्रत्येकबोधक

7. 'सुंदरतर' विशेषण की कौन-सी अवस्था है?

(अ) मूलावस्था (ब) उत्तरावस्था
(स) उत्तमावस्था (द) कोई नहीं

8. निम्नलिखित में उत्तमावस्था का उदाहरण है —

(अ) श्रेष्ठतर (ब) लघुतम
(स) गुरुतर (द) सुंदर

18.6 रूप-तालिका : 'खाना' और 'जाना'

'खाना' (सकर्मक, पुल्लिंग कर्ता : राम / हम)

काल	रूप
सामान्य भूत	राम ने खाया
आसन्न भूत	राम ने खाया है
पूर्ण भूत	राम ने खाया था
अपूर्ण भूत	राम खा रहा था
संदिग्ध भूत	राम ने खाया होगा
हेतुहेतुमद् भूत	राम खाता तो...
सामान्य वर्तमान	राम खाता है
अपूर्ण वर्तमान	राम खा रहा है
संदिग्ध वर्तमान	राम खाता होगा
सामान्य भविष्यत्	राम खाएगा
संभाव्य भविष्यत्	राम खाए

'जाना' (अकर्मक, पुल्लिंग कर्ता)

काल	एकवचन	बहुवचन
सामान्य भूत	वह गया	वे गए
आसन्न भूत	वह गया है	वे गए हैं
पूर्ण भूत	वह गया था	वे गए थे
अपूर्ण भूत	वह जा रहा था	वे जा रहे थे
संदिग्ध भूत	वह गया होगा	वे गए होंगे
सामान्य वर्तमान	वह जाता है	वे जाते हैं
अपूर्ण वर्तमान	वह जा रहा है	वे जा रहे हैं
सामान्य भविष्यत्	वह जाएगा	वे जाएँगे

'होना' के रूप (सहायक क्रिया)

पुरुष	वर्तमान (है)	भूत (था)	भविष्यत् (होगा)
मैं	हूँ	था/थी	होऊँगा/होऊँगी
तू	है	था/थी	होगा/होगी
वह / यह	है	था/थी	होगा/होगी
हम / वे / आप	हैं	थे/थीं	होंगे/होंगी
तुम	हो	थे/थीं	होंगे/होंगी

15. शुद्ध वाक्य चुनिए —
(अ) आप चलो (ब) आप चलिए
(स) आप चलिएगा नहीं (द) आप चला

16. शुद्ध वाक्य है —
(अ) तुम पढ़ता है (ब) तुम पढ़ते है
(स) तुम पढ़ते हो (द) तुम पढ़ती हैं (पुल्लिंग)

17. 'पुनः वापस मिलूँगा' में दोष है —
(अ) लिंग (ब) वचन
(स) पुनरुक्ति (द) कारक

18. शुद्ध वाक्य चुनिए —
(अ) सीता ने रोटियाँ बनाया (ब) सीता ने रोटियाँ बनाईं
(स) सीता ने रोटियाँ बनाई है (द) सीता रोटियाँ बनाईं

✅ उत्तरमाला एवं व्याख्या

1. (स) उसने पुस्तक पढ़ी — कर्म 'पुस्तक' स्त्रीलिंग है, अतः 'पढ़ी'।
2. (ब) मेरी पुस्तक खो गई — क्रिया कर्ता के लिंग के अनुसार।
3. (स) आपके दर्शन हुए — 'दर्शन' नित्य बहुवचन है।
4. (ब) वह सर्वश्रेष्ठतम है — 'सर्व' और 'तम' दोनों उत्कृष्टता बताते हैं।
5. (ब) राम जा रहा है — अकर्मक या वर्तमान में 'ने' नहीं लगता।
6. (अ) सबसे श्रेष्ठ — एक ही अर्थ के दो शब्द नहीं रखने चाहिए।
7. (स) महिलाएँ आईं — स्त्री बहुवचन में 'आईं'।
8. (ब) आपको जाना है — 'चाहिए/होना' के साथ कर्ता में 'को' का प्रयोग।
9. (ब) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है। — 'लोग' बहुवचन होने से 'ये/वे लोग आए' शुद्ध है।
10. (ब) सब बच्चे पढ़ रहे हैं — पुल्लिंग बहुवचन के अनुसार क्रिया।
11. (स) पुनरुक्ति — 'वापस' और 'लौटना' दोनों एक अर्थ के हैं।
12. (अ) मैंने उसे पुस्तक दी — कर्म 'पुस्तक' स्त्रीलिंग; 'ने' भूतकाल के साथ।
13. (ब) बारिश हो रही है — 'बारिश' स्त्रीलिंग है।
14. (ब) मुझे पैसे दो — 'मुझे' शुद्ध रूप है।
15. (ब) आप चलिए — आदर में 'इए' रूप आता है।
16. (स) तुम पढ़ते हो — मध्यम पुरुष 'तुम' के साथ 'हो'।
17. (स) पुनरुक्ति — 'पुनः' और 'वापस' दोनों का अर्थ एक है।
18. (ब) सीता ने रोटियाँ बनाईं — कर्म 'रोटियाँ' बहुवचन स्त्रीलिंग है।

अध्याय 26 : शब्द-शुद्धि (वर्तनी-शुद्धि)

🧠 एक नज़र में

- **वर्तनी** — शब्द को **सही वर्णों और मात्राओं** के साथ लिखने की रीति; इसकी चूक ही **शब्द-अशुद्धि** है।
- परीक्षा में **'शुद्ध शब्द चुनिए'** और **'अशुद्ध शब्द छाँटिए'** — हर परीक्षा में 1 से 3 प्रश्न पक्के।
- **सबसे अधिक भूलें** — **इ/ई**, **उ/ऊ**, **श/ष/स**, **ण/न**, **ऋ/र**, **अनुस्वार/चंद्रबिंदु**, **संयुक्ताक्षर**, **विसर्ग**, **ऐ/औ**।
- **त्योहार, कवयित्री, उज्ज्वल, शृंगार, परीक्षा, सूची, आशीर्वाद, अनुगृहीत, चिह्न, महत्त्व, उपर्युक्त** — सर्वाधिक पूछे जाने वाले शब्द।
- **तालिकाएँ** इस अध्याय में श्रेणी-वार हैं; उन्हें **बाएँ (अशुद्ध) ढककर** याद कीजिए।

26.1 त्योहार — सबसे चर्चित शब्द

स्थिति	रूप	टिप्पणी
मानक (शुद्ध)	**त्योहार**	तिथि + वार से बना; **'यो'** लिखना मानक
प्रचलित/वैकल्पिक	त्यौहार	बोलचाल और कई लेखन में प्रचलित; परीक्षा में **'त्योहार'** ही उत्तर

स्थिति	रूप	टिप्पणी
अशुद्ध	त्यौंहार, त्योंहार, त्यौहर	अनावश्यक चंद्रबिंदु/अनुस्वार या वर्ण-त्रुटि

🎓 **वर्तनी-मानक : मतभेद**

- **मानकीकरण** — **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** द्वारा देवनागरी की **मानक वर्तनी** निर्धारित है (पंचमाक्षर के स्थान पर **अनुस्वार** : गंगा, चंचल, ठंडा, संपादक, संगम)।
- **दोनों रूप स्वीकार्य** — अंतरराष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय; सौंदर्य / सौन्दर्य; गङ्गा / गंगा (मानक : गंगा); चिह्न / चिन्ह (मानक : **चिह्न**)।
- **'त्योहार / त्यौहार'** — शब्दकोशों में **'त्योहार'** मुख्य प्रविष्टि; 'त्यौहार' को वैकल्पिक/प्रचलित बताया गया; **परीक्षा** में मानक रूप ही सही माना जाता है।
- **संस्कृत वर्तनी** — तत्सम शब्दों में **संस्कृत के नियम** (कवयित्री, उज्ज्वल, श्रृंखला नहीं, **शृंखला**); तद्भव में **उच्चारण के अनुसार**।
- **पंचमाक्षर बनाम अनुस्वार** — नए नियम में **'न, म्' से पहले वर्गीय व्यंजन** हो तो अनुस्वार; **'अन्य', 'सम्मान', 'पन्ना'** में पंचमाक्षर यथावत।

26.2 इ-ई की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
परिक्षा	**परीक्षा**	सूचि	**सूची**
कालीदास	**कालिदास**	अतिथी	**अतिथि**
श्रीमति	**श्रीमती**	कवियत्री	**कवयित्री**
पत्नि	**पत्नी**	शक्ती	**शक्ति**
गृहणी	**गृहिणी**	सम्मती	**सम्मति**
जाती (वंश)	**जाति**	रीती	**रीति**
नीती	**नीति**	प्रगती	**प्रगति**
उन्नती	**उन्नति**	सृष्टी	**सृष्टि**
दृष्टी	**दृष्टि**	स्थिती	**स्थिति**
प्रतिक्षा	**प्रतीक्षा**	कवी	**कवि**
बिमारी	**बीमारी**	दिपावली	**दीपावली**
आर्शीवाद	**आशीर्वाद**	समीति	**समिति**
विभिषण	**विभीषण**	समिक्षा	**समीक्षा**
आत्मग्लानी	**आत्मग्लानि**	वनस्पती	**वनस्पति**

26.3 उ-ऊ की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुरुप	**अनुरूप**	स्वरुप	**स्वरूप**
रुप	**रूप**	मुहुर्त	**मुहूर्त**
भुगोल	**भूगोल**	सुचना	**सूचना**
पुज्य	**पूज्य**	पूजनिय	**पूजनीय**
साधू	**साधु**	वायू	**वायु**
आयू	**आयु**	बन्धू	**बंधु**
दुर	**दूर**	पुरा	**पूरा**
नुपुर	**नूपुर**	उरदू	**उर्दू**
सुत्र	**सूत्र**	दुरदर्शन	**दूरदर्शन**
निरुपण	**निरूपण**	रुपक	**रूपक**

मुहावरा	अर्थ	मुहावरा	अर्थ
उल्लू सीधा करना	स्वार्थ सिद्ध करना	कमर कसना	तैयार होना
कलेजा ठंडा होना	संतोष होना	कलेजा मुँह को आना	बहुत भयभीत होना
कान भरना	चुगली करना	कान पर जूँ न रेंगना	कोई असर न होना
कोल्हू का बैल	कठोर परिश्रम करने वाला	खाक छानना	मारे-मारे फिरना
खून-पसीना एक करना	कठोर परिश्रम करना	गागर में सागर भरना	थोड़े में बहुत कहना
गुड़ गोबर करना	बना काम बिगाड़ना	घड़ों पानी पड़ना	बहुत लज्जित होना
घी के दिये जलाना	खुशी मनाना	चाँदी काटना	खूब लाभ कमाना
चुल्लू भर पानी में डूब मरना	अत्यंत लज्जित होना	छक्के छुड़ाना	बुरी तरह हराना
जमीन-आसमान एक करना	बहुत प्रयास करना	जी चुराना	काम से बचना
जान पर खेलना	खतरा मोल लेना	टका सा जवाब देना	साफ़ इनकार करना
टाँग अड़ाना	बाधा डालना	ठनठन गोपाल	कंगाल, खाली
डींग हाँकना	बढ़ा-चढ़ाकर बोलना	तलवे चाटना	चापलूसी करना
तिल का ताड़ बनाना	छोटी बात को बढ़ाना	दाँतों तले उँगली दबाना	आश्चर्यचकित होना
दिन दूनी रात चौगुनी	बहुत तरक्की करना	दो टूक बात	साफ़ बात
नाक में दम करना	बहुत तंग करना	नाक कटना	प्रतिष्ठा जाना
नौ दो ग्यारह होना	भाग जाना	पत्थर की लकीर	अटल बात
पानी-पानी होना	लज्जित होना	पापड़ बेलना	कठिन परिश्रम करना
पैरों तले जमीन खिसकना	होश उड़ जाना	फूला न समाना	बहुत खुश होना
बाल बाँका न होना	कोई हानि न होना	बगलें झाँकना	जवाब न सूझना
बाग-बाग होना	बहुत प्रसन्न होना	मुँह की खाना	हार जाना
मुँह में पानी आना	लालच होना	मक्खी मारना	बेकार बैठना
रंग में भंग होना	आनंद में बाधा पड़ना	राई का पहाड़ बनाना	छोटी बात को बहुत बढ़ाना
लोहा मानना	श्रेष्ठता स्वीकार करना	शेखी बघारना	अपनी बड़ाई करना
सब्ज़ बाग दिखाना	झूठी आशा दिलाना	सिर आँखों पर बिठाना	बहुत सम्मान देना
सोने पर सुहागा	अच्छे पर और अच्छा	हवा से बातें करना	बहुत तेज़ चलना
हाथ मलना	पछताना	हाथ-पैर फूलना	घबरा जाना
हाथ खड़े करना	असमर्थता जताना	हाथ का मैल	तुच्छ वस्तु
दाँत खट्टे करना	बुरी तरह हराना	आँखें फेर लेना	उपेक्षा करना
आँख का काँटा	अप्रिय	कमर टूटना	हिम्मत हार जाना
कान खड़े होना	सतर्क होना	खटाई में पड़ना	अटक जाना
गले का हार	बहुत प्रिय	चाँद पर थूकना	महान् व्यक्ति पर लांछन
चेहरे का रंग उड़ना	घबरा जाना	जहर उगलना	कटु बात कहना
दाल में काला	संदेह की बात	दाल न गलना	सफल न होना
दिल बैठ जाना	हताश होना	नमक-मिर्च लगाना	बढ़ा-चढ़ाकर कहना
पीठ दिखाना	भाग जाना	पौ बारह होना	खूब लाभ होना
मिट्टी में मिलाना	बर्बाद करना	मुट्ठी गरम करना	रिश्वत देना
लकीर का फकीर	पुरानी रीति पर चलने वाला	लाल-पीला होना	क्रोध करना
सिर धुनना	पछताना	सीधे मुँह बात न करना	घमंड दिखाना
सूरज को दीपक दिखाना	जो स्वयं विख्यात उसे परिचित कराना	हथेली पर सरसों उगाना	असंभव कार्य जल्दी करना
पहाड़ टूटना	भारी विपत्ति आना	कंधे से कंधा मिलाना	सहयोग करना
पेट में चूहे कूदना	बहुत भूख लगना	आकाश-पाताल एक करना	बहुत प्रयास करना

स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अंबरतल में॥

- **कवि** — मैथिलीशरण गुप्त (पंचवटी)। **शक्ति** — **लक्षणा** (गौणी)। **विश्लेषण** — किरणों का 'खेलना' **मुख्यार्थ-बाध** है; **लक्ष्यार्थ — चाँदनी का सब ओर चंचलता से चमकना**; 'चाँदनी बिछी है' में भी लक्षणा।

बीती विभावरी जाग री!
अंबर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी॥

- **कवि** — जयशंकर प्रसाद। **शक्ति** — **गौणी (सारोपा) लक्षणा**। **विश्लेषण** — आकाश का 'पनघट', तारों का 'घड़ा' और उषा का 'नागरी' होना **मुख्यार्थ-बाध** है; **लक्ष्यार्थ — प्रभात में तारों का लुप्त होना**।

(ग) व्यंजना के पद्य-उदाहरण

(1) शाब्दी व्यंजना — अभिधामूला

चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि ए वृषभानुजा, वे हलधर के बीर॥

- **कवि** — बिहारी (बिहारी सतसई)। **शक्ति** — **अभिधामूला शाब्दी व्यंजना**। **विश्लेषण** — 'वृषभानुजा' = वृषभानु की पुत्री (राधा) और वृषभ की अनुजा (गाय); 'हलधर के बीर' = बलराम के भाई (कृष्ण) और बैल का भाई। **अनेकार्थी शब्द वाच्यार्थ से बँधे रहने पर भी दूसरा अर्थ ध्वनित करते हैं**।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून॥

- **कवि** — रहीम। **शक्ति** — **शाब्दी (अभिधामूला) व्यंजना / श्लेष का आधार**। **विश्लेषण** — 'पानी' के तीन अर्थ : **चमक (मोती), प्रतिष्ठा (मनुष्य), जल (चूना/आटा)**; शब्द बदलते ही अर्थ-ध्वनि नष्ट हो जाएगी — **शब्द-आधारित व्यंजना**।

(2) शाब्दी व्यंजना — लक्षणामूला

फली सकल मनकामना, लूट्यौ अगनित चैन।
आजु अँचै हरिरूप सखि, भये प्रफुल्लित नैन॥

- **शक्ति** — **लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना**। **विश्लेषण** — 'चैन लूटा' और 'नेत्र प्रफुल्लित हुए' में **लक्ष्यार्थ से** हरि-दर्शन का परम आनंद **ध्वनित** होता है।

(3) आर्थी व्यंजना

सीताहरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ॥

- **कवि** — तुलसीदास (रामचरितमानस)। **शक्ति** — **आर्थी व्यंजना** (वक्ता की विशेषता)। **विश्लेषण** — जटायु से राम का वचन; **व्यंग्यार्थ — मैं स्वयं रावण का वध करूँगा, तब वह स्वयं पिता को खबर देगा**; अर्थ वक्ता (राम) और प्रसंग के कारण ध्वनित।

चलती चाकी देखि के, दिया कबीरा रोय।
दुइ पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥

- **कवि** — कबीर। **शक्ति** — **आर्थी व्यंजना**। **विश्लेषण** — वाच्यार्थ — चक्की के दो पाटों में अनाज पिस जाता है; **व्यंग्यार्थ — संसार (जन्म-मृत्यु, सुख-दुःख के दो पाट) में कोई बच नहीं पाता**।

💡 पद्य-पंक्ति में शक्ति पहचानने की विधि

1. **पहले वाच्यार्थ** लगाइए — सटीक बैठे तो **अभिधा**।
2. असंगति (किरणें खेलना, आग = भूख) दिखे तो **मुख्यार्थ-बाध** देखकर **लक्षणा**।
3. यदि सीधा अर्थ भी ठीक है और **अनेकार्थी शब्द** से दूसरा अर्थ आए (पानी, वृषभानुजा) तो **शाब्दी (अभिधामूला) व्यंजना**।
4. वक्ता, श्रोता, प्रसंग से **तीसरा भाव** (मैं रावण को मारूँगा; संसार में कोई नहीं बचता) निकले तो **आर्थी व्यंजना**।
5. उपभेद : **संबंध (पास-पास)** → शुद्धा; **सादृश्य (समानता)** → गौणी; **रूढ़ प्रयोग** → रूढ़ा; **विशेष प्रयोजन** → प्रयोजनवती।

35.3 रस-सिद्धांत : चार आचार्य

आचार्य	सिद्धांत	मूल बात
भट्ट लोल्लट	उत्पत्तिवाद	रस की उत्पत्ति **अनुकार्य (राम)** में; नट पर **आरोप**
शंकुक	अनुमितिवाद	नट में रस का **अनुमान**
भट्टनायक	भुक्तिवाद (साधारणीकरण)	**भावकत्व, भोजकत्व**; सहृदय रस का **भोग** करता है
अभिनवगुप्त	अभिव्यक्तिवाद	रस की **अभिव्यक्ति** (व्यंजना से) — सर्वाधिक मान्य

🎓 रस : मतभेद

- **रसों की संख्या** — भरत : **8**; बाद के आचार्यों ने **शांत** जोड़कर **9**; वात्सल्य और भक्ति जोड़ने पर **11**।
- **शांत का स्थायी भाव** — **निर्वेद** (कुछ **शम** कहते हैं)।
- **वात्सल्य का श्रेय** — **विश्वनाथ** ने **वत्सल रस** माना; हिंदी में **सूरदास** की बाल-लीला इसका शिखर।
- **भक्ति रस** — **मधुसूदन सरस्वती** और **रूप गोस्वामी** ने स्वतंत्र रस के रूप में स्थापित किया।
- **'रस' की आत्मा** — **आनंदवर्धन** ने **ध्वनि** को आत्मा कहा; **विश्वनाथ** ने **रस** को; **भामह** ने **अलंकार** को; **वामन** ने **रीति** को; **कुंतक** ने **वक्रोक्ति** को; **क्षेमेंद्र** ने **औचित्य** को।

💡 रस याद करने की युक्ति

- **स्थायी भाव (क्रम से)** : **रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद**; रस इसी क्रम में **शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्‌भुत, शांत**।
- **वात्सल्य = वत्सलता; भक्ति = देवविषयक रति**।
- **संचारी भाव** 33 : निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीड़ा, चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, उत्सुकता, निद्रा, अपस्मार, स्वप्न, विबोध, अमर्ष, अवहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, वितर्क।

❌ सामान्य गलतियाँ

- ❌ 'रति' को हास्य का स्थायी भाव कहना → ✅ **शृंगार**; हास्य का **हास**।
- ❌ 'निर्वेद' को वीर का भाव कहना → ✅ **शांत** का।
- ❌ अनुभाव को विभाव मानना → ✅ अनुभाव = **शारीरिक चेष्टाएँ**।
- ❌ उद्दीपन को आलंबन कहना → ✅ आलंबन = **भाव जगाने वाला आधार**; उद्दीपन = **भाव बढ़ाने वाला**।

🎯 परीक्षा में कैसे पूछा जाता है?

- "वीर रस का स्थायी भाव।" — उत्साह।
- "शांत रस का स्थायी भाव।" — निर्वेद।
- "रस-सूत्र किसका?" — भरतमुनि।
- "अभिव्यक्तिवाद किसका?" — अभिनवगुप्त।
- "विभाव के भेद।" — आलंबन और उद्दीपन।

📝 एक पेज में दोहराइए

- स्थायी भाव 9 + वत्सलता + देवविषयक रति।
- रस के अंग : स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी।
- आचार्य : लोल्लट (उत्पत्ति), शंकुक (अनुमिति), भट्टनायक (भुक्ति), अभिनवगुप्त (अभिव्यक्ति)।

हिंदी शब्द	English	हिंदी शब्द	English
अल्पप्राण	Unaspirated	**महाप्राण**	Aspirated
कंठ्य	Guttural	**तालव्य**	Palatal
मूर्धन्य	Retroflex / Cerebral	**दंत्य**	Dental
ओष्ठ्य	Labial	**नासिक्य**	Nasal
संयुक्ताक्षर	Conjunct letter	**उच्चारण-स्थान**	Place of articulation

39.3 शब्द और पद

शब्द-विचार की शब्दावली

हिंदी शब्द	English	हिंदी शब्द	English
शब्द	Word	**पद**	Word in a sentence
संज्ञा	Noun	**सर्वनाम**	Pronoun
विशेषण	Adjective	**क्रिया**	Verb
क्रियाविशेषण	Adverb	**संबंधबोधक**	Postposition
समुच्चयबोधक	Conjunction	**विस्मयादिबोधक**	Interjection
उपसर्ग	Prefix	**प्रत्यय**	Suffix
समास	Compound	**संधि**	Euphonic combination
तत्सम	Sanskrit-derived (as it is)	**तद्भव**	Derived (modified) form
देशज	Native / Indigenous	**विदेशी**	Foreign
रूढ़	Conventional / Primitive	**यौगिक**	Derived / Composite
पर्यायवाची	Synonym	**विलोम**	Antonym
अनेकार्थी	Polysemous	**मुहावरा**	Idiom
लोकोक्ति	Proverb		

व्याकरणिक कोटियाँ

हिंदी शब्द	English	हिंदी शब्द	English
लिंग	Gender	**पुल्लिंग**	Masculine
स्त्रीलिंग	Feminine	**वचन**	Number
एकवचन	Singular	**बहुवचन**	Plural
कारक	Case	**कर्ता**	Nominative / Subject
कर्म	Accusative / Object	**करण**	Instrumental
संप्रदान	Dative	**अपादान**	Ablative
संबंध	Genitive	**अधिकरण**	Locative
संबोधन	Vocative	**काल**	Tense
वर्तमान काल	Present tense	**भूतकाल**	Past tense
भविष्यत् काल	Future tense	**पुरुष**	Person
उत्तम पुरुष	First person	**मध्यम पुरुष**	Second person
अन्य पुरुष	Third person	**वाच्य**	Voice
कर्तृवाच्य	Active voice	**कर्मवाच्य**	Passive voice
भाववाच्य	Impersonal voice	**सकर्मक**	Transitive

हिंदी साहित्य चैनल के अन्य नोट्स

ई-बुक पढ़ने के लिए धन्यवाद! तैयारी के लिए ये सामग्री भी देखिए

हिंदी साहित्य का इतिहास : संपूर्ण नोट्स

- आदिकाल संपूर्ण नोट्स
- भक्तिकाल संपूर्ण नोट्स
- रीतिकाल संपूर्ण नोट्स
- आधुनिक काल संपूर्ण नोट्स
- गद्य विधाएँ संपूर्ण नोट्स

MCQ प्रश्नोत्तरी (उत्तर व्याख्या सहित)

- आदिकाल प्रश्नोत्तरी (700+ MCQ)
- भक्तिकाल प्रश्नोत्तरी (1000+ MCQ)
- रीतिकाल प्रश्नोत्तरी (750+ MCQ)
- आधुनिक काल प्रश्नोत्तरी (2500+ MCQ)
- भारतीय काव्यशास्त्र (850+ MCQ)
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र (700+ MCQ)

UGC NET/JRF हिंदी विशेष

- पेपर 2 कंप्लीट कॉम्बो नोट्स (सभी 10 इकाइयाँ)
- टेस्ट सीरीज़ : 33 टेस्ट पेपर, 1500+ प्रश्न

आपकी परीक्षा के अनुसार कस्टम नोट्स — ऑर्डर पर तैयार

हमारी टीम RPSC, TGT, PGT, UPSC, NET/JRF सहित किसी भी परीक्षा के लिए आपके पाठ्यक्रम के अनुसार विशेष नोट्स ऑर्डर पर तैयार करती है (सशुल्क सेवा)।

WhatsApp : 9680260474

hindisahity.com store.hindisahity.com YouTube : Hindi Sahitya Channel Telegram

© सर्वाधिकार सुरक्षित · लेखक : केवल कृष्ण घोड़ेला · हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर (राजस्थान)